Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

'छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में जनचेतना'

डॉ. लालचंद सिन्हा

सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
शास.नवीन महा., ठेलकाडीह
जिला–राजनांदगांव(छ.ग.)

लोक–साहित्य से अभिप्राय उस साहित्य से है जिसकी रचना लोक करता है। लोक साहित्य में मानवीय जीवन की समस्त परिस्थितियॉ, कार्यव्यापार, समय और समाज उसमें प्रतिबिंबित होता है। लोक जीवन की जितना सहज, निश्छल, व्यापक और मर्मस्पर्शी अभिव्यंजना लोकगीतों में होती है,वैसा अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। लोक साहित्य की अनेक विधाएं हैं–लोक गीत , लोक कथा, लोकगाथा, और लोकोक्तियां। इनमें जीवन को सर्वाधिक अनुप्राणित करने वाली विधा है लोकगीत। लोकगीत लोक संस्कृति का प्रतिबिंब है। जन–जन की मनोभावनाएँ लयबद्ध होकर प्रस्फुटित होती है वही 'लोकगीत' की संज्ञा से पाती है।

'लोकचेतना' एक जीवन दृष्टि है। लोक–साहित्य में लोक चेतना उतनी ही प्राचीन है जितना कि मानव। लोकचेतना से संपन्न कवि हृदय में लोक जीवन के अंतर्विरोधों को पहचान कर जनजीवन में व्याप्त विसंगतियों,विरोधों,अन्याय और शोषण तथा तद्जनित संघर्षों की मार्मिक अभिव्यक्ति के अतिरिक्त समाजोपयोगी चिंतन की रेखाएं भी स्पष्टया अंकित होती रहती है।

पराधीन भारत में राष्ट्रीय चेतना का जो स्वरूप पनपा उसकी विद्रोही भावनाओं की अभिव्यक्ति है।सोने की चिड़िया कहा जाने वाला भारत की सभ्यता–संस्कृति और अर्थव्यस्था को अंग्रेजों ने अत्यंत नुकसान पहुंचाया। छत्तीसगढ़ी लोकगीतों के क्रांतिकारी कवि श्री कुंजबिहारी चौबे की निम्न पंक्तियों में अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ आक्रोश की अनुगूंज सुनायी पड़ती है–

" सात समुन्दर विलायत ले आके, हमला बना दिये भिखारी जी
हमला नचाये तैं बेंदरा बरोबर, बन गये तैं हर मदारी जी।।" 1

बनिक वृत्ति के लिए भारत आने वाले अंग्रजों की दृष्टि साम्राज्यवादी गृद्ध दृष्टि हो गई। हमारे देश की धन–संपदा को लूट–लूट कर यहां की जनता को अत्यंत विपन्न बना दिया और स्यवं स्वामी बन बैठा। अंग्रेजों की कुटिलता और दीन–हीन भारतीयों की दुर्दशा का वर्णन करते हुए बस्तरिहा जनकवि लाला जगदलपुरी जी लिखते हैं –

" करम फाटगे जउंहर होगे, खेत खार मा भूख अकरगे/मन के मया नंदागे भइया,पेट पीठ के गांव अमरगे/नांव बुतागे हे अंजोर के ,सबो डहर अंधियार पसरगे/पहुना बनके जउने आइन,घर जैसे नांग खुसरगे।।" 2

हमारा प्रथम स्वातंत्र्य संघर्ष सन्1857 के विप्लव के समय छत्तीसगढ़ के वीर सपूतों ने भी बढ़– चढ़कर साहस और पराक्रम का परिचय देते हुए अपने प्राणों की आहुतियां दी। वीर सपूत वीर नारायण सिंह सोनाखान के जंगल में बाघ बनकर गरजा था। उनकी वीरता का यश गायन करते हुए कवि श्री सुशील यदु जी लिखते हैं–**"बन बाघ नारायन सिंह हा गरजिस सोनाखान के जंगल में।**

सुमिरिस महामाई काली,जय जय जय खप्परवाली
बारूद के इतिहास लिखे गिस सोनाखान के जंगल में।
रन मातिस काटी के कांटा, अंगरेजी मुंहू में चांटा।
फिरंगी के तोप अउ गोला, इनखर हिम्मत के शोला।

कतको मन रन में कटगे,भुंइया हा लाश में पटगे।।" 3

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधी जी का पदार्पण एक महत्त्वपूर्ण घटना सिद्ध हुई। गांधी जी साधन की पवित्रता को रेखांकित करते हुए स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए तिलक की विलक्षण बेचैनी को देश के तमाम नवयुवकों के हृदय में भर दिया। श्री मकसूदन राम साहू की निम्न पंक्तियों में निःशस्त्र सेनानी गांधी जी के सत्य –अहिंसा के प्रभाव दृष्टव्य है –

" बापू के बोली गली में सुन लेतेंव का गा, मने मन मा गुन लेतेंव ना।
बापू के बोली ह बंदुक के गोली ले जादा हे ताकतवर
भेदिस चालबाजी ,अंगरेज होइस राजी भारत छोड़े बर।।"4

आजादी के बाद विकासशील भारत, समाजवादी भारत, सुख–समृद्ध भारत का जो सपना संजोया गया था वह अवधि व्यतीत होने के साथ चकनाचूर होता गया। राष्ट्रीय एकता–अखंडता के स्थान पर जातिवाद,संप्रदायवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद ने ग्रहण कर लिया। साठ का दशक जनता के मोह भंग का दशक है। देश की एकता–अखंडता और इसकी स्वाधीनता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए राष्ट्रीय लोकचेता कवि जनमानस के आह्वान में गा उठता है –

" सुनो सुनो संगवारी मोर, भारत के लाज बचाना है।
ये जीव रहत ले तिरंगा झंडा लहर लहर लहराना हे।
भारत माता बड़ मुश्किल में मुश्की बंधना ले छूटे हे।
हाथ के हथकड़ी हा भइया,पांव के बेड़ी टूटे हे।
इन्कलाब जिन्दाबाद,इन्कलाब जिन्दाबाद, रद्दा रेंगइया बोले हे।।" 5

'' माता भूमिः पुत्रोअहं पृथिव्याः'' एवं ''वयं राष्ट्रे जागृयांय पुरोहिताम्'' कहकर वेदों ने मातृभूमि की वंदना की है। जन्मभूमि को देवी स्वरूपा मानकर उनके प्रति प्रेम और भक्ति की परंपरा हमारे लोकगीतों में भी बहुत पुरानी है। लोकगीतकार ने धरती मैया के प्रति सर्वस्व समर्पण भाव से वंदना किया है –**" मैं बन्दत हौं दिन रात ओ मोर धरती मइया, जय होवय तोर/सूत उठ के बड़े बिहनिया, तोरे पइयां लागवं/सुरूज जोत मं करवं आरती, गंगा पांव पखारवं/फेर काया फूल चढ़ाववं ओ, मोर धरती मइयां जय होवय तोर। तोर कोरा सब जीव जंतु के घर दुवार अउ डेरा/तही हमन के सुख दुख के अउ ये जिनगी के फेरा/ तोर मया म जग दुलरावं मोर धरती मइयां जय होवय तोर/ मोर छइयां भुइयां जय होवय तोर।" 6**

समाज जब पतनोन्मुख होता है, तब उसके प्राचीन आदर्श कुरीतियों की सीमा में पहुंच जाती है। हमारे समाज में जाति भेद ने अस्पृश्ता के कलंक को जन्म दिया। छूआछूत और जाति भेद को दूर करने के लिए संत शिरोमणि गुरु घासीदास ने ''मनखे–मनखे एक समान'' का संदेश इसी छत्तीसगढ़ की माटी से दिया था। उनके समता मूलक संदेश को छत्तीसगढ़ के लोक कवियों नें अपनी रचनाओं में मुखरित किया है।लोक कवि डॉ. नरेश कुमार वर्मा जी अपनी कविता 'बिहनिया' में लिखते हैं –**"देश के गांव गांव जगाके/सबो के जर फर सहित/ पाट देबो हम बींज/संगे म रहिबो/खाबो संग मा, नइ राखन एको निशान/दाई ददा भाई बहिनी के,/ नता मा सब बंधाबो/परेम सनेह के अंजोर मा,/ बैर अउ फूट भगाबो।।" 7**

मार्क्सवादी विचारधारा का साहित्य में उदय प्रगतिवाद के रूप में हुआ। प्रगतिवाद शोषण मुक्त समाज की स्थापना की कोशिशों का समर्थन करता है। छत्तीसगढ़ी लोककवियों ने भी प्रगतिवादी भाव–बोध के साथ युग–युग से शोषित,पीड़ित व दलित श्रमिकों, कृषकों,गरीबों आदि के मानवीय परिवेश की सच्चाई का उद्घाटन किया है। छत्तीसगढ़ी के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. विनय कुमार पाठक जी की संवेदना 'एक किसिम के नियाव' कविता में दृष्टव्य है –

" बैसाखू/सेठ इंहा जाके /जांगर पेर के/महल अटारी बनाथे/घर भर सबो/ छांव बर कलपथे/ फेर माटी के बेटा/माटी के घर कुरिया नइं बना सकै।" 8

जिस तरह से कार्ल मार्क्स ने ''दुनिया के मजदूरों एक हो'' का नारा दिया था,उसी तरह छत्तीसगढ़ की माटी के जन कवि स्व. लक्ष्मण मस्तुरिहा जी सर्वहारा वर्ग का नायक बनकर आह्वान करते हुए गा उठते हैं –

'' मोर संग चलव रे ,मोर संग चलव गा
ओ गिरे थके हपटे मन,अउ परे डरे मनखे मन/ मोर संग चलव...../ सरग ल पृथ्वी म ला देहू/ प्रन अइसन ठाने हवं/ मोर सुमत्त सरग निसइनी,जुरमिल सबव चढ़व रे/ मोर संग चलव रे ...../ नवा जोत लव नवा गांव बर/ रस्ता नवा गढ़व रे/ मोर संग चलव गा।।'' 9

औद्योगिक क्रांति ने शहरीकरण को जन्म दिया है। शहरीकरण के आगोश में गांव खोता जा रहा है। कृषि आधारित अर्थतंत्र वाले इस देश की कृषि संस्कृति शनैःशनैः विनष्ट होती जा रही है। औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण के प्रभाव में आकर गांव का आदमी अपनी छइयां भुइयां को छोड़कर शहर की ओर इन कारणों से पलायन के लिए इस प्रकार सोच रहा है –

'' चल सहर जातेन रे भाई , गांव ल छोड़के चल सहर जातेन
टिम टिम टिम टिम दिया ह बरथे, धुंगिया आंखी म भरथे।
डर लागथे कोलिहा के बोली, हुवां हुवां जब करथे।
बिजली बत्ती पातेन रे भाई, गांव ल छोड़के चल सहर जातेन।।''
माड़ी भरके चिखला हवय,रद्दा किचकिच लगथै
माड़ी उपर धोती उठाथ,अड़बड़ लाज लगथे।
चिक्कन चिक्कन रेंगतेन रे भाई, गांव ल छोड़के चल सहर जातेन।'' 10

ऐसी स्थिति में गांव के प्रति असीम अनुराग रखने वाले लोक कवि के कोकिल कंठ से गांव की महिमा मुखरित हो उठता है –

''अरे गांव ल छोड़के सहर डहर, झन जा झन जा संगा रे
मोर गंवई गंगा ये, मोर गंवई गंगा ये
ये माया के बादर ये,भारत मां के काजर ये
ये भुइयां के अछरा,ये धरती के गजरा
जुगुर जागर राती हे,चुहुल पुहुल संझा रे ,मोर गंवई गंगा ये .....।।''11

हमारा देश कृषि प्रधान देश है । कृषि अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। किंतु इस बाजारवादी व्यवस्था में समूचित आर्थिक नीतियों के अभाव में कृषकों की दशा होरी सा है।समूचित मूल्य न मिलना, मंहगाई की मार, शोषण तिस पर शहरी चकाचौंध ने नई पीढ़ी के कृषकों का मोह भंग कर दिया है। कृषक समुदाय मजदूर बनकर शहर की ओर जा रहा है। आसन्न संकट के प्रति लोक कवि पूर्णतः सचेत है। माटी पुत्रों का आह्वान करते हुए कह रहा है –

''जतन करव धरती के संगी, जतन करव रे/उठो जवान जागव रे, जागव किसान जागव रे/मोर जतन करव रे, मैं माटी महतारी अवं/दुख सुखमें संग देवइया, संगवारी अवं ।।''12

सहयोग और सामूहिकता के अभाव में श्रम संकट पैदा हो गया है। कृषि श्रम शक्ति का शहरों की ओर पलायन निश्चय ही चिंतनीय विषय है। मोहभंग जनित अकर्मण्यता ने कृषि कर्म को हाशिए पर डाल दिया है। सामूहिक श्रम के आगे नदियों की धारा रूक जाती है,पर्वत शीश झुकाता है। श्रममेव जयते का उद्घोष लोककवि के कंठ से गीत बनकर मुखरित हो रहा है –

''चल जोही जुरमिल कमाबो जी, करम खुलगे/पथरा म पानी ओगराबो,माटी म सोना उपजाबो/गंगरेल बांधेन, पैरी ल बांधेंन, हसदो ल लेहेन रोक/खरखरा खार म रूद्री के पानी ,खेती म लेहेन रोक/महानदी ल गांव गांव पहुंचाबोन जी, करम खुलगे।चल संगी जुरमिल ..।। 13

बढ़ते वैश्विक ताप ने पूरी दुनिया को पर्यावरणीय दुश्चिंताओं में डाल दिया है। पेड़ों को काट काट कर मानव प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ रहा है। परिणामतः अनावृष्टि,अतिवृष्टि, असमय वृष्टि,बाढ़, सूखा, भूकंप जैसी

प्राकृतिक आपदाओं से सारा जीव जगत जूझ रहा है। वर्षा की अनिश्चितता ने गरीबी की मार झेल रहे कृषकों के सामने 'दूबर बर दू असाढ़' जैसी स्थिति उत्पन्न कर दिया है। किसानों का प्राण संकट में है। दीन–हीन किसान का संतप्त हृदय करुण क्रंदन करते हुए कह रहा है –

'' नीम के डंगाली में चढ़े करेला के नार, ठगवा कस पानी ठगतहे, मुड़ धर रोवै किसान।
संगवारी ग मोर, कइसे बचाबो परान, ये संगवारी ग मोर कइसे बचाबो परान ।।14

जीवन का सबसे सुंदर पल बचपन होता है। नितांत कोमल और निश्छल बचपन को अशिक्षा और गरीबी की कुदृष्टि लग गई है। हमारे देश में आजादी के इतने सालों बाद भी बाल मजदूरी का कलंक बना हुआ है। यह कैसी विडम्बना है कि चंद्र और मंगल की यात्रा करने वाले इस देश में उसके भविष्य नौनिहालों के हाथ किसी होटल में जूठे प्लेटें धो रहा है, कहीं ईंटें बना रहा है, संपन्नों की आतिशबाजी के लिए पटाखे बनाते हुए जल रहा है, तो कहीं कूड़े बीन रहा है। और तो और भीख मांगते हुए दूसरों के आगे फैला हुआ है। लगता है इनके हिस्से की सारी किताबों को दीमकों ने चट कर लिया है। सरकारी दावों को खारिज करते हुए जनमन के कवि डॉ. नरेश कुमार वर्मा जी लिखते हैं –**''रायपुर के होटल मा/भेलई के ढाबा मा/छोटे छोटे लइका मन/पेट के खातिर धोवत हे पलेट/कोनो मा रामू हे/कोनो मा गोपाल/पेट के खातिर/कोनो मा हे गणेश/खंटत हे दिन रात/खावत हे घूंसा लात/पेट के खातिर/झेलत हे गजब कलेस/दुलरवा ये माई के/ बेटा धरती दाई के/जिनगी मटियामेट।।'' 15**

हमारा सामाजिक जीवन राजनीति केन्द्रित और संचालित है। सामाजिक पतन के लिए राजनीतिक विद्रूपताएं जिम्मेदार है। स्वार्थ में आकण्ठ डूबे नेतागण पूंजीपतियों से हाथ मिलाकर जनतंत्र की नितप्रति हत्याएं कर रहे हैं। शोषण और भ्रष्टाचार के तमाम हथकण्डे अपनाकर अपनी कोठियां भरने में लगे हुए हैं। पता नहीं राजनीति में ऐसी कौन सी जादुई शक्ति है कि गरीब तबके का कोई व्यक्ति गरीबों का हितैषी होने का दावा करने वाला, सत्तासीन होते ही गरीब जनता से विमुख हो जाता है। ऐसे नेताओं पर तंज कसते हुए जनचेतना के कवि प्रभंजन शास्त्री जी लिखते हैं –

''समुन्दर ल छोड़े के बाद/नून हा नूनछूरे रहिथय/कुसियार के गुर हा,गुरतुरे रहिथय/मनखे ह कइसे बदल जाथय/हवेली ह हवेली ल चिन्हथय/कुरिया ह काबर नि चिन्हारी करय कुरिया के।'' 16

निष्कर्ष :इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लोकगीतों में मानव मन की समस्त मनोभावनाएं लयबद्ध होकर प्रस्फूटित होती हैं। लोक साहित्य में जीवन सौंदर्य और अंतर्विरोध पूर्ण चेतना के साथ मुखरित होता है। यह मनोजगत में उद्बुद्ध होने वाली समस्त भावों को सहजता, निश्छलता और संपूर्णता के साथ अभिव्यक्ति प्रदान करने पूर्णता सक्षम है। लोक जीवन की समस्त चेतना प्रतिबिंबित ही नहीं,मूर्तमान हो उठती है। इसे हम संपन्न भाषाओं की शिष्ट साहित्य की तुलना में किंचित भी पिछड़ा नहीं मान सकते। 'लोक' शब्द सचमुच ही प्रकाश एवं दृश्य जगत् का द्योतक है।

संदर्भ सूची :

1. कुंज बिहारी चौबे : छत्तीसगढ़ी काव्य की विकास यात्राः शिक्षादूत प्रका. पृ. 13
2. लाला जगदलपुरी : वही :पृ. 15
3. सुशील यदु : छत्तीसगढ़ के सुराजी बीर : पृ. 13
4.. मकसूदन राम साहू : छत्तीसगढ़ी काव्य की विकास यात्राः शिक्षादूत प्रका. पृ. 19
5. श्रुति आधारित : गायक : बैतल राम साहू
6.श्रुति आधारित : गीतकार एवं गायकः लक्ष्मण मस्तुरिहा
7.डॉ. नरेश कुमार वर्माः माटी महतारीः पृ. 3
8. डॉ. विनय कुमार पाठक :जनपदीय भाषा,साहित्य छत्तीसगढ़ी पृ.42

9. श्रुति आधारित : गीतकार एवं गायकः लक्ष्मण मस्तुरिहा
10. श्रुति आधारित : गीतकार एवं गायकः खुमान साव
11. श्रुति आधारित : गीतकार खुमान साव एवं गायिकाः कविता वासनिक
12. श्रुति आधारित : गायिकाः दुखिया बाई मरकाम
13. श्रुति आधारित : गीतकार : लक्ष्मण मस्तुरिहा एवं गायिकः कविता वासनिक
14. श्रुति आधारित : गीतकार : लक्ष्मण मस्तुरिहा एवं गायिकः कविता वासनिक
15. डॉ. नरेश कुमार वर्माः माटी महतारीः पृ. 65
16. प्रभंजन शास्त्री : छत्तीसगढ़ी काव्य की विकास यात्राः शिक्षादूत प्रका. पृ.13